RPM COLLEGE PATNA CITY

DR. NEELAM KUMARI

Dept- SOCIOLOGY

भारतीय जाति व्यवस्था

जाति/वर्ण भारतीय सामाजिक जीवन का एक प्रमुख यथार्थ है। भारतीय समाज का अध्ययन करने वाला कोई भी इतिहासकार, समाजशास्त्री, नृविज्ञानी और यहाँ तक कि राजनीतिक अर्थशास्त्री भी, इस सच्चाई की उपेक्षा नहीं कर सकता है। निश्चित तौर पर, यह बात सही है कि भारतीय जनमानस पर जातिगत मानसिकता का प्रभाव गहराई तक है। लेकिन जाति व्यवस्था और जातिगत मानसिकता की बात पर ज़ोर डालते हुए कई बार सामान्य लोगों से लेकर अकादमिकों, राजनीतिक कार्यकर्ताओं तक में इस पहलू को भारतीय समाज और जीवन का एकमात्र सर्वप्रमुख पहलू करार देने का रुझान होता है। ऐसा करके व्यवहारतः वह जाति व्यवस्था और जातिगत मानसिकता की समस्या को वस्तुतः समाधान के एजेण्डे पर नहीं रखते, बल्कि उसे एक ऐसा अतियथार्थ बना देते हैं, जिसके पार जाना सम्भव नहीं है।

- वास्तव में, इस प्रकार के निष्कर्षों में जो चीज़ निहित होती है, वह है जाति व्यवस्था के प्रति एक अनैतिहासिक नज़रिया। जाति व्यवस्था एक प्रकार से अनादि और अनन्त बना दी जाती है; एक ऐसा यथार्थ जो शाश्वत और सनातन है। निस्सन्देह, आम तौर पर इस प्रकार के बयान देने वाले लोगों का यह मक़सद नहीं होता है। लेकिन वस्तुगत तौर पर इस प्रकार की बातों का नतीजा कुछ ऐसा ही निकलता है। जाति व्यवस्था के प्रति एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण न अपनाना एक प्रकार का पराजय-बोध पैदा करता है, जो कि जाति व्यवस्था को अपराजेय बनाकर प्रस्तुत करता है। अन्य सभी संघर्षों, “पहचानों” और वर्ग-संघर्ष को ख़ारिज करते हुए यह नज़रिया जाति व्यवस्था को भारतीय जीवन और जनता का एक अभिन्न अंग बना देता है,

औद्योगीकरण

औद्योगीकरण एक सामाजिक तथा आर्थिक प्रक्रिया का नाम है। इसमें मानव-समूह की सामाजिक-आर्थिक स्थिति बदल जाती है जिसमें उद्योग-धन्धों का बोलबाला होता है। वस्तुत: यह आधुनीकीकरण का एक अंग है। बड़े-पैमानें की उर्जा-खपत, बड़े पैमाने पर उत्पादन, धातुकर्म की अधिकता आदि औद्योगीकरण के लक्षण हैं। एक प्रकार से यह निर्माण कार्यों को बढ़ावा देने के हिसाब से अर्थप्रणाली का बड़े पैमाने पर संगठन है।

औद्योगिकीकरण और जाति व्यवस्था

सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में आधुनिकीकरण :– समाज और उसकी संस्कृति में हमेशा परिवर्तन होता रहा है।प्रत्येक समाज में चाहे अनचाहे यह प्रक्रिया अपनी गति से चलती रहती है विश्व में ऐसा कोइ समाज नहीं है जो परिवर्तन से अछूता हो।यही कारण है कि प्राचीन काल से ही विद्वानों नें सामाजिक परिवर्तन को चर्चा का एक महत्वपूर्ण विषय बनाये रखा है।चूँकि परिवर्तन समाज का शाश्वत नियम है।सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया पर क्रमबद्ध ढंग से चिंतन की शुरूआत उन्नीसवीं शताब्दी मे ही हुई।समाज वैज्ञानिकों में सबसे पहले इस विषय पर ध्यान सम्भवतः अंग्रेजी इतिहासकार हेनरी समनर मेंन को जाता है ।-[1] जिन्होनें अपनी पुस्तक ।Ancient low (1861)में बताया हैं कि समाज एक सरल व्यवस्था से जटिल व्यवस्था की ओर अग्रसर होता है, उनके समकालीन मानव शाष्त्री मार्गन का भी विचार वैसा ही था।इन विद्वानों के विचार से यह स्पष्ट होता है कि समाज एक परिवर्तन शील व्यवस्था है।

यह सामाजिक परिवर्तन समाज के आन्तरिक तथा बाहरी दोनों पक्षों में हो सकता है । किसी युग के आदर्श एवं मूल्य में यदि पिछले युग के मुकाबले कुछ परिवर्तन दिखाई पड़े तो उसे आन्तरिक परिवर्तन कहेंगे। यदि सामाजिक अंग जैसे-परिवार ,वर्ग ,जातीय हैसियत समूहों के स्वरूपों एवं आधारों में परिवर्तन परिलक्षित हो तो उसे संरचनात्मक परिवर्तन कहेगें। लेकिन यहाँ इस पर ध्यान देना है कि समाज के जो बुनियादी सामाजिक एंव सांस्कृतिक तत्व है जैसे- परिवार ,वर्ग ,राजनीति आर्थिक एंव सांस्कृतिक संस्थाएं सदैव मौंजूद रहती है।वे समाज के स्थाई तत्व हैं जिसमें परिवर्तन होता है।

व्यापक दृष्टि से देखें तो पता चलता है कि समाज की प्रत्येक संरचना ,संगठन एंव सामाजिक सम्बन्ध में निरन्तर परिवर्तन होता है।चूँकि सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौमिक एव अनिवार्य प्रक्रिया है; मध्य कालीन समाज, प्राचीन काल आधुनिक समाज मध्य कालीन समाज से तुलनात्मक दृष्टि से विश्व स्तर पर काफी भिन्न है यह बात दूसरी है कि सामाजिक परिवर्तन की गति कभी भी एक समान नहीं रही लेकिन सामाजिक परिवर्तन प्रक्रिया की गति हमेंशा एवं हर काल में चलती रहती है। "ऐन्थनी गिडेन्स" [1] का कहना है।कि लगभग 18वीं शताब्दी से सामाजिक परिवर्तन की गति मानव के इतिहास में सापेक्ष रूप से सबसे तेज़ रही है, और बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सामाजिक परिवर्तन की गति और तेज हो गयी है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की तरक्की ने सामाजिक परिवर्तन की गति को तेज करने में सबसे अधिक महत्वपुर्ण योगदान दिया है।

आधुनिकीकरण उन परिवर्तनों से सम्बधित है जो अच्छाई के लिए होता है।शिक्षा एक ऐसे परिवर्तन को जन्म देती है जिससे समाज का सार्वांगिण विकास सम्भव हो पाता है। शिक्षा व्यक्ति के नैतिक अध्यात्मिक तथा भौतिक विकास से सम्बधित है यही कारण है कि प्रत्येक समाज में उसे समयानुकूल बनाने का प्रयास किया जाता है।

भारतीय ग्रामीण समाज में भी शिक्षा व्यवस्था का रूपान्तरण उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है। पहले शिक्षा का प्रबन्ध परिवार तथा समुदायों में हो जाया करता था। परिवार तथा गाँव के बड़े- बुढ़े लोग शिक्षा देने का कार्य करतें थें शिक्षा का मुख्य उद्देश्य लोगों को आत्म नियंत्रण तथा संयम दिखाया जाना अधिक था प्राचीन और मध्य काल में लड़कियों को जो शिक्षा दी जाती थी उसमें सहिष्णुता,सहकारिता, सद्भावना आदि की प्रधानता थी। समाज की जटीलता के साथ- साथ शिक्षा प्रणाली भी परिवर्तित हो रही है। शिक्षण कार्य विशेषीकृत संस्थाओं द्वारा पुरा कराया जाता है।

आज शिक्षा के क्षेत्र में जो महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है वह सह शिक्षा और तकनिकी शिक्षा को बढ़ावा देना है। सह शिक्षा से स्त्री और पुरूषों के बिच भेद कम होता है और महिलाएँ भी पुरूषों के साथ -साथ काम करने के लिए कटिबद्ध होती है। जिसके फलस्वरूप उनके बीच लिंग भेद की भावना समाप्त होती है। तकनिकी शिक्षा व्यक्ति की सुख समृद्धि में प्रत्यक्ष रूप से मदद करती है। इस प्रकार शिक्षा लोगों की मनोवृत्तियों में परिवर्तन ला कर उन्हें उस प्रकार के व्यवहार के लिए प्रेरित करती है जो व्यवहार आधुनिक समाज की विशेषता है इस प्रकार शिक्षा समाज में प्रचलित मूल्यों में वांछनीय परिवर्तन समाज को नवीन उद्देश्यों के प्रति जागरूक करता है।

ग्रामीण जीवन में परिवार संस्था का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। सामाजिक संगठन में परिवार की मूलभूत विशेषता थी कि मुखिया की आज्ञा का पालन परिवार के सभी सदस्य करते थे। प्रत्येक सदस्य अपने हित की बात बाद में तथा सामूहिक हित के बारे में पहले सोचता था।

सम्पत्ति पर सामूहिक अधिकार होता था उम्र के बड़े लोगों को अधिक सम्मान दिया जाता था। परिवार के सभी सदस्य अपने शक्ति के अनुसार प्रेम भाव के द्वारा पारिवारिक उद्देश्यों की पूर्ति करते थे।

शहरीकरण का अर्थ EFFECTS & PROBLEMS
इसके प्रभाव OF URBANIZATION

शहरीकरण का अर्थ, इसके प्रभाव

- शहरीकरण ग्रामीण क्षेत्र से शहरी निवास की ओर, जनसंख्या पलायन को संदर्भित करता है। यह मुख्य रूप से वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कस्बों और शहरों का गठन होता है, क्योंकि अधिकतर लोग केंद्रीय क्षेत्रों में रहना और काम करना शुरू करते हैं।
- संयुक्त राष्ट्र ने अनुमान लगाया कि दुनिया की आधी आबादी शहरी क्षेत्रों में रहती है। यह अनुमान लगाया गया है कि 2050 तक विकासशील दुनिया का लगभग 64% और विकसित दुनिया का 86% भाग शहरी कृत होगा।

- शहरीकरण विशाल सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय परिवर्तन बनाता है, जो "अधिक उपयोग करने योग्य भमि उपयोग और प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र की जैव विविधता की रक्षा के लिए, संसाधनों का अधिक कशलतापूर्वक उपयोग करने की क्षमता" के साथ स्थिरता का अवसर प्रदान करता है।
- यह केवल एक आधुनिक घटना नहीं है, बल्कि वैश्विक स्तर पर मानव सामाजिक जड़ों का एक तेज़ और ऐतिहासिक परिवर्तन है, जिससे ग्रामीण संस्कृति को मुख्य रूप से शहरी संस्कृति द्वारा प्रति स्थापित किया जा रहा है । गांव संस्कृति को घनिष्ठ संबंधों और सांप्रदायिक व्यवहार से चिह्नित किया जाता है, जबकि शहरी संस्कति को अपरिचित संबंधों और प्रतिस्पर्धी व्यवहार से दर्शाया जाता है।

शहरीकरण से जुड़े कुछ पहलू

- पिछले कछ दशको में भारतीय समाज और जीवन मे अनेक वहदस्तरीय परिवर्तन हये है । ये परिवर्तन महानगरी और शहरो में विशेषरुपेण परिलक्षित होते है । जनसख्या वद्धि कई साथ-साथ महानगरो और शहरो की जनसख्या बेतहाशा बडी है ।
- गावो-कत्त्वो से एक बडी सख्या में लोगों ने इनकी ओर रूख किया है । नतीजा यह है कि सडकों-बाजारो में लोग ही लोग दिखाई पड़ते हैं । अपराध, बाल अपराध, मदिरापान और मादक वस्तुओ का सेवन, आवास की कमी, भीड-भाड और गन्दी बस्तिया, बेरोजगारी और निर्धनता, प्रदूषण और शोर, सचार और यातायात नियन्त्र जैसी अनेक जटिलतम समस्याएं उत्पन्न हुई है ।

- किन्तु यदि शहरीकरण दबाव एवं तनाव का स्थान है तो वह सभ्यता एवं संस्कृति का केन्द्र भी है । वे सक्रिय, नावचारयुक्त और सजीव है । यह प्रत्येब व्यक्ति को उसकी अभिलाषाओं एवं आकाक्षाओ को प्राप्त करने हेतु अवसर प्रदान करते है ।
- हमें देश का भविष्य जितना ग्रामीण क्षेत्रों के विकास से सम्बधित है उतना ही शहरो एव महानगर के क्षेत्रों के विकास से । शहरीकरण से उत्पन्न सभी समस्याओ का विश्लेषण करने से पूर्व हमा लिए शहरीकरण की अवधारणा को जाननो अत्यन्त आवश्यक है ।

- एक अनुमान के अनुसार, एक करोड व्यक्ति प्रति सप्ताह शहरों में गांवों से चले आते हैं-रोजी-रोटी और तरक्की के सपने संजोए । हालांकि शहरों मे एक-तिहाई से ज्यादा लोग बेघर हैं । शहरों मे लगभग 40 प्रतिशत लोगों के पास पीने के लिए स्वच्छ पानी नहीं है, सफाई व्यवस्था भी ठीक नहीं और स्वास्थ्य सुविधाएं भी कम आय वाले व्यक्तियों के लिए बहुत कम है ।
- फिर भी शहरो की आबादी इतनी रफ्तार से बढ रही है कि विशेषज्ञों के एक अनुमान के अनुसार सन् 2000 आने तक दुनिया की आधी आबादी शहरी में होगी । ऐसे में शहरी आवास की समस्याओं को ज्यादा देर तक अनदेखा करना मानव हित में नहीं होगा ।

जाति व्यवस्था पर संस्कृतिकरण का प्रभाव

- **संस्कृतीकरण की परिभाषा:**
- संस्कृतीकरण की परिभाषा करते हुए डॉ॰ एम. एन. श्रीनिवास ने अपनी पुस्तक 'Social Change in Modern India' में लिखा है, "संस्कृतीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई 'निम्न' हिन्दू जाति या कोई जनजाति अथवा अन्य समूह, किसी उच्च और प्रायः द्विज जाति की दिशा में अपने रीति-रिवाज, कर्मकाण्ड, विचारधारा और जीवन-पद्धति को बदलना हैं ।"

संस्कृतीकरण की इस परिभाषा में इस प्रक्रिया की निम्नलिखित विशेषताओं पर जोर दिया गया है:

- (I) संस्कृतीकरण के द्वारा कोई भी जाति, जनजाति या समूह उतार चढ़ाव के सामाजिक क्रम में वर्तमान से ऊँचा स्थान प्राप्त करने का प्रयास करता है ।
- (II) संस्कृतीकरण की प्रक्रिया निम्न जाति के उच्च जाति का अनुकरण करने से चलती है ।
- (III) संस्कृतीकरण की प्रक्रिया केवल जाति में ही नहीं बल्कि जनजाति अथवा अन्य सूमह में भी देखी जा सकती है ।

संस्कृतिकरण के परिणाम या प्रभाव:

- इससे **जातीय प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष में वृद्धि** होती है क्योंकि उच्च जातियां संस्कृतिकरण को रोकने का प्रयास करती हैं।
- इससे **निम्न जातीय समूहों की जीवन शैली में परिवर्तन होता है** और उनके द्वारा अच्छी ना समझी जाने वाली क्रियाओं को छोड़ दिया जाता है।
- संस्कृतिकरण से **निम्न जातीय समूहों की स्थिति में सुधार तथा जाति गतिशीलता संभव**होती है।
- इससे **महिलाओं की स्थिति में गिरावट** आती है।

भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य संस्कृति

पश्चिमीकरण

- **पश्चिमीकरण** का अर्थ पश्चिमी देशों अर्थात योरोप और अमरीका की संस्कृति को स्वीकार करना। इसमें उन देशों का खाना-पीना, पोशाक, रहन-सहन आदि आदि शामिल हैं।

जाति व्यवस्था पर पश्चिमीकरण

- यूनानियों के साथ शुरू होने वाली पश्चिमी संस्कृति का विस्तार और सुदृढ़ीकरण रोमनों द्वारा हुआ, पंद्रहवी सदी के पुनर्जागरण एवं सुधार के माध्यम से इसका सुधार और इसका आधुनिकीकरण हुआ और सोलहवीं सदी से लेकर बीसवीं सदी तक जीवन और शिक्षा के यूरोपीय तरीकों का प्रसार करने वाले उत्तरोत्तर यूरोपीय साम्राज्यों द्वारा इसका वैश्वीकरण हुआ। दर्शन, मध्ययुगीन मतवाद एवं रहस्यवाद, ईसाई एवं धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद की एक जटिल श्रृंखला के साथ यूरोपीय संस्कृति का विकास हुआ। ज्ञानोदय, प्रकृतिवाद, स्वच्छंदतावाद (रोमैन्टिसिज्म), विज्ञान, लोकतंत्र और समाजवाद के प्रयोगों के साथ परिवर्तन एवं निर्माण के एक लंबे युग के माध्यम से तर्कसंगत विचारधारा विकसित हुई. अपने वैश्विक सम्बन्ध की सहायता से यूरोपीय संस्कृति का विकास संस्कृति की अन्य प्रवृत्तियों को अपनाने, उन्हें अनुकूलित करने और अंततः उन्हें प्रभावित करने के एक अखिल समावेशी आग्रह के साथ हुआ।

Westernization Include

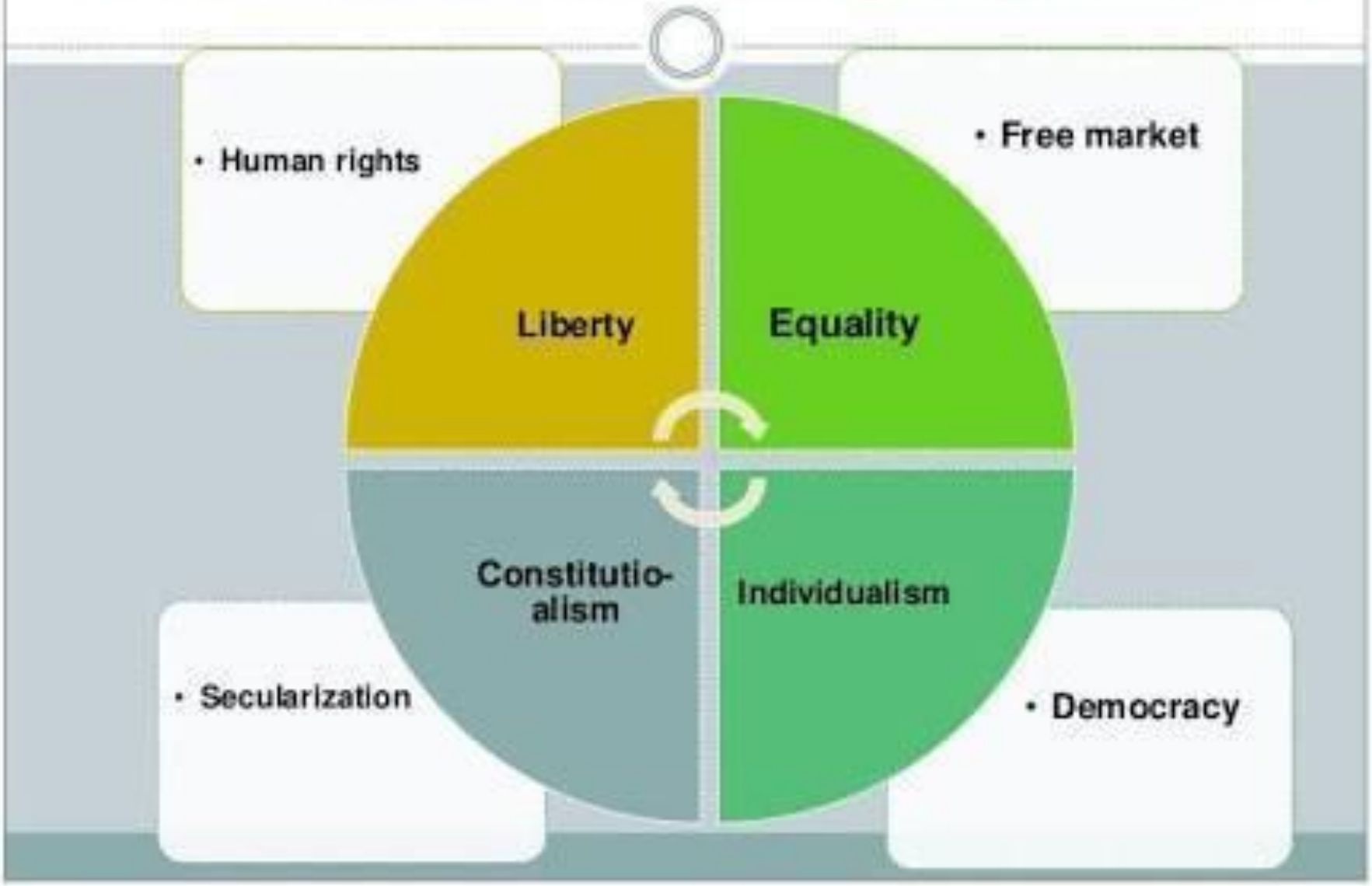

- "पश्चिमी संस्कृति" शब्द का इस्तेमाल, मोटे तौर पर सामाजिक मानदंडों, नैतिक मूल्यों, पारंपरिक रिवाजों, धार्मिक मान्यताओं, राजनीतिक प्रणालियों और विशिष्ट कलाकृतियों और प्रौद्योगिकियों की एक विरासत को सन्दर्भित करने के लिए किया जाता है। विशेष रूप से, पश्चिमी संस्कृति का मतलब हो सकता है:
- उत्तर-शास्त्रीय युग के आसपास, आध्यात्मिक सोच, रिवाज और या तो नीति सम्बन्धी या नैतिक परम्पराओं पर एक बाइबिल-ईसाई सांस्कृतिक प्रभाव.
- कलात्मक, संगीतात्मक, लोकगीतात्मक, नैतिक और मौखिक परम्पराओं से संबंधित पश्चिमी यूरोपीय सांस्कृतिक प्रभाव, जिनके विषयों को आगे चलकर स्वच्छंदतावाद द्वारा विकसित किया गया है।

धन्यवाद्